शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ४२ : नई दिल्ली : २२-२८ जनवरी २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सानंद आमेट पधार गए हैं। पूज्य आचार्यप्रवर ने ११ नवम्बर को अपने धर्म परिवार के साथ केलवा से आमेट के लिए विहार किया था। दो महीने से अधिक की इस प्रभावक यात्रा में पूज्यप्रवर ने राजसमन्द, चित्तौड़गढ़ एवं भीलवाड़ा जिलों के पूर्व निर्धारित पचपन गांवों और नगरों में प्रवास और मार्गवर्ती लगभग सभी गांवों का स्पर्श किया। इनमें से कुछ ऐसे क्षेत्र भी रहे, जहां पूज्य आचार्यों का कभी पदार्पण नहीं हुआ। केलवा और आमेट के बीच की मात्र १७ किमी. की दूरी पूज्यप्रवर के लिए ५४६ किमी. की हो गई। आचार्यप्रवर की इस यात्रा से संघ की अतिशय प्रभावना हुई, लोकोपकार हुआ। आमेट पदार्पण के अवसर पर परम श्रद्धेय आचार्यवर का भावभीना स्वागत हुआ है। यह नगर बाहर से आनेवाले अतिथियों का स्वागत करने हेतु पूरी तरह से तैयार है।

वर्द्धमान महोत्सव के मंगल अवसर पर परमपूज्य आचार्यवर का मंगल उद्‌बोधन

जैन वांग्मय में कहा गया है--चउव्विहे समणसंघे--धर्मसंघ चतुर्विध होता है--साधु-साध्वी, श्रावक और श्राविका। वर्तमान समय में चतुर्विध धर्मसंघ के आध्यात्मिक शास्ता आचार्य होते हैं। दूसरे धर्मसंघों के बारे में मैं कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता। तेरापंथ शासन को तो हम देख ही रहे हैं। अतीत में भी देखा है। चतुर्विध धर्मसंघ का आधिपत्य एक आचार्य में निहित होता है। संघ का अधिपति कोई दूसरा नहीं, एकमात्र आचार्य होते हैं। वर्धमान महोत्सव वृद्धि, समृद्धि की प्रेरणा देनेवाला बन सकता है। साध्वियों ने अभी बहुत सुन्दर गाया कि सौ शिष्यों की कामना है। सौ तो एक सीमित काल की बात है, शिष्य तो और ज्यादा होने चाहिए। सौ से संतोष नहीं करना चाहिए। सौ की बात तो परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के जन्मशताब्दी वर्ष में श्रद्धांजलि के रूप में है। होना तो सौ से ज्यादा चाहिए। इस लक्ष्य की संपूर्ति का दायित्व साधु-साध्वियों, समण-समणियों और श्रावक-श्राविकाओं सब पर है। लक्ष्य नहीं होता है तो काम नहीं होता है। एक बिन्दु के रूप में एक किसी लक्ष्य का निर्धारण हो जाए तो हमारी शक्ति का प्रवाह उस दिशा की ओर मुड़ जाता है। शक्ति का स्रोत जब बलवत्ता के साथ उस ओर मुड़ता है तो उस बिन्दु का स्पर्श भी हो सकता है। सभी साधु-साध्वियां और समण श्रेणी इस बिन्दु को अपने सामने रखें कि सन् २०१४ की कार्तिक शुक्ला द्वितीया का सूर्यास्त हो, तब तक सौ दीक्षाएं संपन्न हो जाएं। अभी दो वर्षों से ज्यादा समय हमारे सामने है। इस अवधि में हमारी शक्ति का नियोजन काफी मुख्यता के साथ होना चाहिए। अगर ऐसा होता है तो परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के चरणों में यह हमारी एक ठोस श्रद्धांजलि हो सकेगी। मैं तो सोचता हूं कि गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी वर्ष का कोई नम्बर एक कार्यक्रम है तो वह सौ दीक्षाओं का कार्यक्रम है। और सब कार्यक्रम हमें बहुत छोटे लगते हैं। भले ही बड़े-बड़े नेता आ जाएं, बड़ी-बड़ी कान्फ्रेंसेज हो जाएं, वे सब कार्यक्रम मुझे तो छोटे लगते हैं। सबसे बड़ा कार्यक्रम मुझे सौ दीक्षाओं वाला लगता है। इस दिशा में प्रयास बहुत अपेक्षित है। काम कठिन है, किसी को दीक्षा के लिए पूर्णतया तैयार कर देना, लेकिन हमें तो यह कठिन काम करना है। उसके लिए अपने पुरुषार्थ का नियोजन करना है।

अभी साध्वीप्रमुखाजी ने पांचनिष्ठाओं का उल्लेख किया। मैं तो इन पांच निष्ठाओं को पंचामृत मानता हूं। ये पांच अमृत हैं। पहली निष्ठा है--आत्मनिष्ठा। हमारे में आत्मकल्याण के प्रति निष्ठा होनी चाहिए। इसके लिए साधक अभिनिष्क्रमण करता है। हम आत्मसाधना की दिशा में आगे बढ़ें, हमारी आत्मा निर्मल रहे। हम आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ते हुए आत्मदर्शन कर सकें, इस दृष्टि से हमारी निष्ठा पुष्ट होनी चाहिए। **आतमा रा कारज सारसां, मर पूरा देसां**-- इस वाक्य में कितनी बड़ी आत्मनिष्ठा ध्वनित हो रही है। यह आचार्य भिक्षु की आत्मनिष्ठा

थी। हम सबमें भी आत्मकल्याण की भावना उदग्र रहनी चाहिए। थोड़ा कष्ट आए तो आ जाए, पर आत्मकल्याण की दिशा में हमारी गति मंद नहीं होनी चाहिए।

दूसरी निष्ठा है--संघनिष्ठा। वर्तमानकाल संघबद्ध साधना का समय है। एकाकी साधना के लिए संभवतः अनुकूल समय है या नहीं है। हमने आत्मकल्याण के लिए संघबद्ध साधना का पथ स्वीकार किया है। जिस संघ में हम आए हैं, जुड़े हैं, सम्मिलित हुए हैं, उस संघ के प्रति हमारे मन में निष्ठा रहनी चाहिए। मैं तो संघ को बहुत महत्त्व देता हूं और कहना चाहता हूं कि आचार्य से भी बड़ा संघ है। आचार्यों का महत्त्व है, पर मैं तो आचार्यों से भी बड़ा धर्मशासन को मानता हूं। संघ हमारे लिए बहुत बड़ा आधार है, इसलिए हम सबका कर्तव्य है कि हम संघ के प्रति निष्ठा रखें। मंत्री मुनि मगनलालजी स्वामी फरमाया करते थे कि आचार्यों से भी बड़ा संघ है। संघ के मालिक आचार्य हैं, किन्तु छोटी-मोटी बातों को लेकर संघनिष्ठा में कमजोरी नहीं आनी चाहिए। हमारे पैर मजबूत रहें। आचार्य शास्ता हैं, इसलिए वे कभी किसी को उलाहना भी दे सकते हैं। कुछ कड़ी कार्यवाही भी कर सकते हैं, ऐक्शन भी ले सकते हैं, पर उन स्थितियों को लेकर दिल में कभी कोई कमजोरी नहीं आनी चाहिए। वे कितनी भी कड़ाई करें, पर यह भावना रहे कि हम तो खैर के खूंटे हैं। जिएंगे तो संघ में जिएंगे और मरेंगे तो संघ में मरेंगे। यानी छोटी-मोटी व्यावहारिक बातों को लेकर संघ के प्रति सम्मान और आस्था में किसी प्रकार की कमजोरी नहीं आनी चाहिए। आचार्यों के उलाहना और कड़ाई को बहुत विनयभाव से झेलना चाहिए। मुझे तो चिताम्बा में कुछ अंशों में पुरानी साध्वियों की स्मृति हो गई। हालांकि मैंने साध्वी लक्ष्मीकुमारीजी और साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' (श्रीडूंगर.) आदि साध्वियों को बहुत थोड़ा-सा कहा था। किन्तु साध्वियों ने जो विनयभाव दिखाया, उससे मुझे पुरानी साध्वियों की याद आ गई। मैंने परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी से सुना था कि पुरानी साध्वियों को उलाहना दिया जाता तो वे कहती--'गुरुदेव! आपने तो हमें अमृत का प्याला पिला दिया।' संभवतः साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' (श्रीडूंगरगढ़) ने भी यही कहा कि आप तो हमें अमृत का प्याला पिला रहे हैं। इतना विनय और श्रद्धा का भाव दिखाया। पुराने समय में विनयनिष्ठा साध्वी लाडांजी हुआ करती थीं। वे लाडनूं की थीं और श्रीडूंगरगढ़ में उनका स्थिरवास था। आज अगर साध्वियों में वैसे विनय भाव हैं तो यह बहुत संतोष की बात है। वे पुराने संस्कार जिन्दा हैं और जिन्दा रहने चाहिए। उलाहना भी कोई रोज थोड़े ही मिलता है, कभी-कभी मिलता है, इसलिए कभी-कभी मिलने वाले इस मौके पर बहुत ऊंचा परिचय देना चाहिए। ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि रोज डांटते रहते हैं, बल्कि ऐसा मानना चाहिए कि हमें तो गुरु का प्रसाद मिला है।

गुरु व्यवस्था आदि के विषय में कभी कुछ पूछें और कठिनाई हो तो इतना कह दें कि गुरुदेव! हमें यह कठिनाई है, बाकी आपकी मर्जी। मैंने कई साधु-साध्वियों के पत्र की भाषा को देखा, उसमें लिखा मिला कि गुरुदेव! हमें यह कठिनाई है, बाकी आपकी मर्जी। अपनी कठिनाई बता देनी चाहिए और उसके बाद सब कुछ गुरु पर छोड़ देना चाहिए।' बाकी आपकी मर्जी' में एक समर्पण का भाव है। यह हमारी संघीय गरिमा को बढ़ाने वाला और संघ के प्रति निष्ठा को प्रस्तुत करनेवाला समर्पणपूर्ण विनययुक्त वाक्य है। संघ चिरस्थायी है, कोई व्यक्ति तो स्थायी है नहीं। व्यक्ति तो आते हैं, चले जाते हैं, पर संघ तो शताब्दियों से चलता आ रहा है और कामना करते हैं कि लंबे समय तक चलता रहे। संघ हमारा सुरक्षित रहे, प्रवर्द्धमान रहे, ऐसा चिंतन-मनन और प्रयास करना चाहिए।

संघ सेवा के प्रति हमारे मन में निष्ठा रहनी चाहिए। मैं साधु-साध्वियों की सेवा भावना को देखता हूं तो मुझे संतोष होता है कि साधु-साध्वियों में सेवा की कितनी भावना है। अभी भीलवाड़ा से हमने विहार किया और मुनि नयकुमार से कहा कि तुम्हें मुनि रजनीशकुमारजी की सेवा में रहना है। मुनि नयकुमार हमारे आसपास रहनेवाला मुनि दिनेशकुमारजी के वर्ग का साधु है। उसने संभवतः एक चुंकारा तक नहीं किया कि गुरुदेव आप हमें अलग क्यों रख रहे हो? तुरंत आज्ञा पालन हेतु तत्पर हो गया। तो हमारे युवा साधु-साध्वियों में ऐसे संस्कार पुष्ट होते रहें। मैं तो यह भी कहा करता हूं कि मेरी सेवा भले ही छोड़ दो, पर मैं जिसकी सेवा के लिए कहूं, उसकी सेवा किया करो। मेरी सेवा कोई खास बात नहीं। मैं तो अभी युवा अवस्था में हूं। पर जिसकी सेवा के लिए मैं कहूं, उसकी सेवा अहोभाव से किया करो।

गुरुकुलवास में इतने साधु-साध्वियां रहते हैं, बहिर्विहार में भी कितने-कितने साधु-साध्वियां रहते हैं, जब समीक्षा में जाता हूं तो मुझे इस बात का संतोष होता है कि आज भी सेवा की भावना कितनी अच्छी है। फिर भी मुझे इस संदर्भ में और अपेक्षा महसूस हो रही है। एक बात मैं आपको बताऊं, हमारे संघ की व्यवस्था में

अब तीन वर्ष की चाकरी बक्सीस आदि अपवाद के सिवाय अनिवार्य है। संघ के हर साधु-साध्वी पर एक कर्जा है और तीन वर्ष तक सेवा करके इस कर्ज को चुकाना है। तीन वर्ष की सेवा करने वाले तो ऋणमुक्त हो जाते हैं, पर तीन वर्ष की सेवा जिनकी बाकी है, फिर चाहे वे गुरुकुलवास के हों, न्यारा के हों, क्या कभी उनके मन में यह चिंतन आता है कि तीन साल की सेवा अभी हमारी हुई नहीं है, ऐसे में अगर ऊपर चले गए तो सेवा का कर्जा साथ में जाएगा। अगर ऐसा चिंतन मन में आता है तो साधु-साध्वियों की ओर से यह प्रयास होना चाहिए कि वे निवेदन करें कि हमें आप जल्दी से जल्दी सेवा का मौका दें, जिससे हम कर्जमुक्त बन सकें। यह भावना किसी के मन में आती है कि नहीं? वैसे हमने कई साधु-साध्वियों को ऐसा कहते सुना है--'आप हमसे चाकरी करवा लो, क्योंकि हमारी अवस्था आ रही है। हम सेवा का कर्जा अपने साथ लेकर नहीं जाना चाहेंगे।' या तो चाकरी की बक्सीस हो जाए तब तो मैं मानूंगा कि उस पर सेवा का दायित्व नहीं रहा। वह बिना सेवा किए इस दुनिया से जाएगा तो भी सेवा का कर्ज अपने साथ लेकर नहीं जाएगा। किन्तु जिन्हें बक्सीस नहीं हुई है, उसके मन में बार-बार यह भावना आनी चाहिए कि जल्दी से जल्दी हमें सेवा का मौका मिले, जिससे हम कर्जमुक्त हो सकें। सिर्फ मन में ही भावना न रहे, भावना शब्दों में अभिव्यक्त भी हो।

साधु-साध्वियां साहित्य का निर्माण करें, हमारा साधुवाद है। साधु-साध्वियां कला के क्षेत्र में दक्षता प्राप्त करें, हमारा साधुवाद है। अच्छे ध्यानी-व्याख्यानी बनें, हमारा साधुवाद है, पर जो हमारे निर्देशानुसार वृद्ध और ग्लान साधु-साध्वियों की सेवा में स्वयं को नियोजित करें, उन्हें हमारा सौ-सौ साधुवाद है। हमारी सेवा में कमी रहे, कोई बात नहीं, हम तो अभी सक्षम हैं, इसलिए हमारी सेवा में कमी रह जाए तो कोई विचारणीय बात नहीं, पर जिन्हें चित्तसमाधि पहुंचाने की जरूरत है, उन्हें चित्तसमाधि मिलती है तो मैं इसे अपनी ही चित्तसमाधि मानूंगा।

वर्तमान में मेरी भावना यह है कि जो गुरुकुलवास में हैं, उनकी अपेक्षा जो बहिर्विहारी साधु-साध्वियां हैं, उनको सेवा का अवसर ज्यादा मिलना चाहिए। हालांकि गुरुकुलवास के साधुओं को भी सेवा में नियुक्त किया गया है। मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी 'सुदर्शन', मुनिश्री सुखलालजी स्वामी, मुनिश्री किशनलालजी स्वामी, मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी, मुनिश्री धर्मरुचिजी स्वामी आदि मुनिवरों को भी सेवा में नियुक्त किया जा चुका है। ये प्रायः सभी गुरुकुलवास के हैं, किन्तु इन्हें सेवा में भेजा गया। भेळा के साधु-साध्वियां तो रिजर्व फोर्स की तरह हैं, जिन्हें सेवा में कभी भी नियुक्त किया जा सकता है, किन्तु ज्यादा अवसर मिलना चाहिए उन्हें जो बहिर्विहारी हैं। पहली प्राथमिकता न्यारा के साधु-साध्वियों को मिलनी चाहिए। जहां सेवा की बात आती है, वहां ग्रुप की बात गौण हो जाती है। वहां पुराने मनोमालिन्य की बात भी गौण हो जाती है। शुद्ध मन से की जाने वाली, कर्तव्य भावना से की जाने वाली सेवा व्यक्ति की सेवा के साथ-साथ शासन की, संघ की सेवा है, आचार्यों की सेवा है। इसलिए हमारे मन में सेवा के प्रति अहोभाव होना चाहिए। आपकी ओर से बार-बार यह बात, यह निवेदन आए कि हमें सेवा का अवसर प्रदान किया जाए। इससे हमारा भी उत्साह बढ़ेगा कि देखो, हमारे संघ में सेवा को लेकर कितनी भावना है। (सभी साधु-साध्वियों ने करबद्ध खड़े होकर पूज्यवर से चाकरी में नियोजित करने की प्रार्थना की) आज तो हमने इसका साकार रूप देखा, जब साधु-साध्वियों ने खड़े होकर स्वयं को सेवा के लिए प्रस्तुत किया। इससे हमें एक सात्विक आह्लाद हो रहा है कि हमारे साधु-साध्वियों में कितना संवेग है सेवा के प्रति। यह संवेग बना रहे और निरंतर प्रवर्द्धमान होता रहे। सेवा का मौका मिल रहा हो तो गुरुकुलवास छोड़कर भी सेवा में जाने के लिए समुद्यत रहना चाहिए।

यहां एक और बात का ध्यान रहे कि आचार्यों के पास रहना एक बात है और आचार्यों की इच्छा के अनुरूप चलना विशेष बात है। पास में रहना अच्छी बात है, किन्तु पास में रहने की अपेक्षा आचार्यों की इच्छा और दृष्टि के अनुसार चलने को गुरुकुलवास में रहने से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण मानता हूं। इस तरह हम सबके मन में हमेशा सेवा की भावना रहनी चाहिए। जहां सेवा की बात है, वहां कोई भी अलंकरण इसमें बाधक नहीं होना चाहिए। सेवा तो अपने आप में स्वयं एक अलंकरण है। चाहे शासन गौरव हो, शासनश्री हो, जहां सेवा की बात आती है, वहां सेवा किसी भी अलंकरण को और ज्यादा अलंकृत कर देती है। संघ का कोई भी साधु-साध्वी कहीं भी रहे, लेकिन जहां भी उचित हो, जितनी अपेक्षा हो, हमें सेवा देने का प्रयास करना चाहिए।

चौथी निष्ठा है--आज्ञानिष्ठा। आज्ञा के प्रति हमारे मन में सम्मान की भावना होनी चाहिए। आचार्यों की आज्ञा है तो उसी के अनुसार हमें काम करने का प्रयास करना चाहिए। इस संदर्भ में मैं कहना चाहूंगा कि कभी

कोई कठिनाई हो तो हमें बता दिया करें। मेरा निर्देश भी हो तो अपनी कठिनाई को बताने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए। आवेदन को मैं बुरा नहीं मानता। लेकिन जैसा कि अभी मैंने कहा, अपनी कठिनाई को निवेदित करने के बाद उसके साथ यह जरूर जोड़ देना चाहिए कि 'बाकी आपकी मर्जी।' हर निवेदन के बाद उसके साथ यह जरूर जोड़ देना चाहिए। इस संदर्भ में युवाचार्य जीतमलजी का उदाहरण सामने रहे। उनकी तो महिमा ही अपरंपार थी। आचार्य ऋषिराय का आदेश हो गया कि बीदासर से बीकानेर चौमासे के लिए जाओ। इस आदेश के बाद कैसे वे बीकानेर पधारे, वह पूरा प्रसंग उनके युवाचार्य रूप को और ज्यादा गौरवमंडित करनेवाला है। युवाचार्य को तो अपने गुरु के प्रति और ज्यादा समर्पित होना ही चाहिए। इससे दूसरों को कितनी प्रेरणा मिलती है। इस तरह आज्ञानिष्ठा का पूरी जागरूकता के साथ पालन होना चाहिए। आचार्यों की आज्ञापालन में किसी भी प्रकार का किंचित् भी प्रमाद नहीं होना चाहिए। यथासमय आज्ञा लेने का भी ध्यान रखना चाहिए।

पांचवीं निष्ठा है--आचारनिष्ठा। यह भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। साधु का अपने आचार के प्रति सम्मान का भाव होना चाहिए। अपने आचार के प्रति जागरूकता रखें। मर्यादाएं, जो हमारी सुरक्षा कवच हैं, उनके प्रति सम्मान की भावना रहे। इस प्रकार ये पांच निष्ठाएं अमृत के समान हैं। हमारे आचार्यों ने शासन की कितनी बड़ी सेवा की है। गुरुदेव तुलसी को हम याद करें, कितने लंबे समय तक उन्होंने शासन की सेवा की है। आचार्य महाप्रज्ञ को हमने देखा है कि अपने ढंग से किस प्रकार उन्होंने संघ को सुव्यवस्थित करने का प्रयास किया। उनके शासनकाल में नई-नई व्यवस्थाएं प्रारंभ हुई। सभी आचार्यों ने अपने ढंग से शासन को सुव्यवस्थित और संचालित करने का महान् प्रयत्न किया। मैं तो दसों आचार्यों के प्रति उनकी सेवाओं के लिए श्रद्धाप्रणत हूं ।

भि भा रा ज म मा डा का तु।
महाप्रज्ञ गुरु दशकं पातु ॥

हम अपने धर्मशासन के प्रति निष्ठा रखते हुए अपनी साधना को आगे बढ़ाएं और जितना हो सके, हमारा यह शरीर शासन की सेवा में लगे। यह शरीर जो हमें प्राप्त है, वह शासन की सेवा में प्रयुक्त होता रहे, यह अहोभाव रहना चाहिए।

इसी तरह हमारी समण श्रेणी भी बहुत सेवा करने वाली श्रेणी है। अनेक रूपों में यह शासन की सेवा कर रही है। इस श्रेणी में भी पवित्र सेवा कार्य की भावना प्रवर्द्धमान रहे। समण-समणियां भी अच्छे काम करते रहें। इस द्विदिवसीय वर्द्धमान महोत्सव को हमने मनाया और आज इसके समापन का समय। हम सभी अच्छे लक्ष्यों के प्रति सभी दिशाओं में वर्द्धमान बने रहें, यह शुभाशंसा।

लावासरदारगढ़ में भव्य स्वागत

११ जनवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः जिलोला से लावासरदारगढ़ की ओर विहार किया। मार्गवर्ती भाडला गांव के बैरवा समाज के लोगों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यवर ने ग्रामीणों को पावन पाथेय प्रदान किया। इसी प्रकार स्वागत के लिए प्रतीक्षारत 'रावों का खेड़ा' गांव के ग्रामीणों को भी पूज्यवर ने पावन संबोध प्रदान किया। यहां मार्ग के दोनों ओर पंक्तिबद्ध खड़े राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों ने भी आचार्यवर का आशीर्वाद प्राप्त किया।

लगभग नौ किमी. का विहार कर आचार्यवर वर्द्धमान महोत्सव हेतु लावासरदारगढ़ पधारे। महातपस्वी शान्तिदूत आचार्यवर के स्वागत में जैसे सारा गांव उमड़ पड़ा। चारों ओर उल्लास और उत्साह का वातावरण था। न केवल तेरापंथ समाज, अपितु अन्य जैन एवं जैनेतर समाज भी अतिशय प्रफुल्लित था। स्थान-स्थान पर राजपूत, खटीक, रेगर, मुस्लिम आदि समाजों द्वारा पूज्यप्रवर का भाव भरा अभिनंदन किया गया। अनेक स्थानीय संस्थाओं के कार्यकर्ता भी पूज्यवर का स्वागत कर हर्षाप्लावित थे। भव्य स्वागत जुलूस बामूल दरवाजा, सदर बाजार, पुराना बस स्टैण्ड होते हुए प्राथमिक स्वास्थ्यकेन्द्र के सामने निर्मित प्रवचन पाण्डाल में पहुंच कर सभा के रूप में परिणत हो गया। आचार्यवर का त्रिदिवसीय प्रवास इसी स्वास्थ्यकेन्द्र में हुआ।

गजपुर चतुर्मास संपन्न कर सेवाभावी मुनि जयचन्दलालजी और नाथद्वारा चतुर्मास संपन्न कर मुनि जतनमलजी आज पूज्य सन्निधि में पहुंचकर अहोभाव की अनुभूति कर रहे थे। आज साध्वी मधुबालाजी और साध्वी संघप्रभाजी ने तथा जिलोला में साध्वी जसवतीजी आदि साध्वियों ने पूज्यवर के दर्शन किए।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल एवं कन्यामंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। स्थानीय तेयुप के अध्यक्ष श्री गणपत हिरण, श्री हस्तीमल कच्छारा, श्री करणलाल चींपड़ ने पूज्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। स्थानीय सभा के अध्यक्ष और वर्द्धमान महोत्सव समिति के अध्यक्ष डॉ. बसंतीलाल बाबेल ने पूज्यवर के स्वागत में अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। मुनि दर्शनकुमारजी ने अपनी जन्मभूमि में अपने आराध्य की अभ्यर्थना की। लावासरदारगढ़ के २२५ श्रावक-श्राविकाओं ने पंचसूत्री संकल्प स्वीकार कर आचार्यवर को त्यागमयी भेंट अर्पित की। श्री पारसमलजी दूगड़ ने कान्दीवली (मुम्बई) प्रेक्षाकेन्द्र की रिपोर्ट पूज्यवर को उपहृत की। गोविन्दगढ़ (पंजाब) की ओर से आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में तीन हजार नशामुक्ति संकल्प पत्र और छत्तीस बारहव्रती श्रावकों के संकल्प पत्र आचार्यवर को भेंट किए गए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जैन दर्शन में तीन शब्द प्राप्त होते हैं--ज्ञेय, हेय और उपादेय। जानने योग्य, छोड़ने योग्य और ग्रहण करने योग्य को क्रमशः ज्ञेय, हेय और उपादेय कहा जाता है। नव तत्त्वों में बंध, पुण्य, पाप और आश्रव हेय हैं। कर्म बंध का मूल कारण है आश्रव। समस्या के मूल तक पहुंचे बिना उसका समाधान मुश्किल होता है। साधक के लिए आवश्यक है कि उसका कषाय मन, वचन और कायरूपी योगों में न आए। तीन योगों में भी यदि मन शुद्ध हो जाए तो वचन और काय तो स्वतः शुद्ध बन जाएंगे। यदि योगों में कषाय का प्रवेश न हो तो साधना सिद्धि की दिशा में गति कर सकती है।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'आज हम वर्द्धमान महोत्सव के लिए लावासरदारगढ़ आए हैं। तेरापंथ धर्मसंघ एक मूल्यवान धर्मसंघ है। हम पूर्ण सुरक्षा के साथ इसे समृद्ध बनाने का प्रयास करें। सब के भीतर आध्यात्मिकता और व्यवहार कौशल पुष्ट हो। लावासरदारगढ़ की भूमि पर मैं यहां के तपस्वी शिवजी स्वामी का अत्यन्त सम्मान के साथ स्मरण कर रहा हूं। यह क्षेत्र गौरवशाली है कि ऐसे महान् तपस्वी संत यहां पर हुए। मुनि दर्शनकुमारजी भी यहीं के हैं। ये भक्तिमान और निष्ठाशील मुनि हैं। अच्छा कार्य करते रहें। यहां के बसन्तीलालजी बाबेल प्रबुद्ध और चिंतनशील व्यक्ति हैं। न्यायाधीश के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। वर्द्धमान महोत्सव धर्मसंघ के मिलन का समय है। अपने बहिर्विहारी साधु-साध्वियों से मिलकर मैं आह्लाद की अनुभूति कर रहा हूं। चतुर्विध धर्मसंघ साधना पथ पर उत्तरोत्तर प्रगति करता रहे।' कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

अलंकरणों में रुचि नहीं

कार्यक्रम में मेवाड़ कान्फ्रेंस की ओर से अध्यक्ष श्री बसंतीलाल बाबेल ने आचार्यवर को **'संत शिरोमणि'** अलंकरण स्वीकार करने का अनुरोध करते हुए मेवाड़ के गणमान्य व्यक्तियों के साथ अलंकरण पूज्यप्रवर को समर्पित किया। श्री पदमचन्द पटावरी ने इस संदर्भ में अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

अपने प्रवचन के मध्य पूज्यप्रवर ने इसके प्रत्युत्तर में कहा--'अभी मेवाड़ कान्फ्रेंस ने अपनी ओर से अलंकरण देने का विनयपूर्ण प्रयास किया। इस संदर्भ में मैं अपना मंतव्य बताना चाहूंगा। पहली बात तो यह कि मेरे मन में अलंकरणों और संबोधनों में रुचि नहीं है। कदाचित् स्वीकार करना भी पड़े, किन्तु मेरी अभिरुचि नहीं रहती कि मैं अलंकरणों को स्वीकार करूं। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञ के प्रयासों से संघ की सेवा का अवसर तो मुझे मिला ही है और गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने अपने मुखारबिन्द से 'महातपस्वी' भी फरमा दिया। मैं तो इसे उनका बहुत बड़ा आशीर्वाद मानता हूं। और अलंकरणों की रुचि नहीं है। साधु तो इनसे जितना मुक्त रह सके, उतना अच्छा है।

दूसरी बात जो ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, वह यह है कि तेरापंथ समाज की अनेक केन्द्रीय और आंचलिक संस्थाएं हैं। मेरे मन में विचार है कि समाज की संस्थाओं का अलंकरण स्वीकार नहीं करना चाहिए। ऐसा मेरे मन में विचार बना हुआ है। क्योंकि हमारे समाज की ही संस्थाएं हैं, हमारे ही श्रावक हैं, वे तो अपनी भक्ति से मुझे बहुत कुछ कह सकते हैं। मैं अपने श्रावकों की भक्ति तो चाहूंगा, वात्सल्य भी चाहूंगा, यथासमय उनका चिंतन भी लेना चाहूंगा। उनसे हम आहार भी ले रहे हैं, पानी भी ले रहे हैं, कितना कुछ ले रहे हैं। अब हमें उनसे अलंकरण लेने की अपेक्षा नहीं है। इसलिए मेवाड़ कान्फ्रेंस ने यह जो प्रयास किया है, मैं उनकी भक्ति भावना और उनके वात्सल्य को तो स्वीकार करता हूं, किन्तु यह जो अलंकरण दिया है, उसे विनय के साथ पुनः लौटाता हूं। हालांकि मैंने उसे स्वीकार भी नहीं किया, फिर भी देखने के लिए हाथ में लिया था, उसे भी पुनः लौटा रहा हूं।' पूज्य आचार्यप्रवर का यह निस्पृह भाव देखकर लोग अभिभूत हो गए।

मध्याह्न में 'बालकों में नैतिक विकास' विषयक सम्मेलन का समायोजन हुआ जिसमें लावासरदारगढ़ और परिपार्श्व के क्षेत्रों से समागत लगभग ७५० विद्यार्थी संभागी बने। संभागियों को परमपूज्य आचार्यवर का पावन पाथेय प्राप्त हुआ। इस अवसर पर शासनश्री मुनि सुखलालजी, मुनि पुलकितकुमारजी आदि के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। रात्रि में भजन संन्ध्या की आयोजना हुई। बेंगलुरु से समागत संगायिका सुश्री हेमलता एवं सोनम पीपाड़ा ने अपनी प्रस्तुतियां दीं।

सरदारगढ़ के गढ़ में तेरापंथ सरदार

१२ जनवरी। आज परम श्रद्धेय आचार्यवर प्रातः लावासरदारगढ़ के गढ़ की ओर पधारते हुए स्थानीय पंचायत भवन में पधारे। सरपंच श्री नारायणलाल प्रजापत ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। यहां आचार्यवर से मंगलपाठ सुनकर पंचायत भवन के परिवर्द्धित भवन का लोकार्पण किया गया।

नवनिर्मित पंचायत भवन में समायोजित कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'हम ग्राम पंचायत के भवन में आए हैं। मैं चाहता हूं कि गांव नशामुक्त रहे और इसकी आध्यात्मिक उन्नति होती रहे।'

पंचायत भवन से प्रस्थान कर आचार्यवर मनोहर सागर तालाब के समीप स्थित गढ़ में पधारे। कुंअर महिपालजी ने आचार्यवर का श्रद्धासिक्त स्वागत किया। पूज्यवर ने होटल हेरिटेज में परिवर्तित इस गढ़ के विभिन्न भागों का अवलोकन किया। कुंअरजी ने बताया--'हमारी सत्रह पीढ़ियां मेवाड़ की रक्षार्थ काम में आईं।' उन्होंने गढ़, तेरापंथ के पंचमाचार्य श्री मघवा एवं पश्चातवर्ती आचार्य परंपरा से संबद्ध इतिहास की विशद अवगति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में कहा--'आज हम लावासरदारगढ़ के विशाल गढ़ में आए हैं। जैसा मुझे बताया गया कि तेरापंथ के इतिहास के साथ इस गढ़ का संबंध है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने यहां 'बड़ी हाजरी' का कार्यक्रम किया था। रावले के सदस्यों में धार्मिक संस्कार अक्षुण्ण रहें और परिवार जनता की आध्यात्मिक सेवा करता रहे।' गढ़ के अवलोकन के उपरान्त पूज्यप्रवर कतिपय श्रद्धालुओं के घरों का स्पर्श करते हुए पुनः प्रवास स्थल पर पधार गए।

वर्द्धमान महोत्सव का पावन समायोजन

प्रातःकालीन कार्यक्रम में वर्द्धमान महोत्सव का पावन समायोजन हुआ। इस द्विदिवसीय कार्यक्रम का प्रथम चरण 'बड़ी हाजरी' के रूप में आयोजित हुआ। समणीवृन्द ने समूह गीत को सुमधुर प्रस्तुति दी। बहिर्विहारी साध्वियों द्वारा भी वर्द्धमान महोत्सव के संदर्भ में सामूहिक गीत का संगान किया गया। बाल साध्वियों ने 'तेरापंथ की विकास यात्रा' नामक रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। साध्वियों के इस कार्यक्रम की श्लाघा करते हुए आचार्यवर ने कार्यक्रम में संभागी प्रत्येक साध्वी को इक्कीस-इक्कीस कल्याणक बक्शीश किए।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'वह धर्मसंघ प्रवर्द्धमान होता है, जिसमें शिष्य के मन में गुरुनिष्ठा और गुरु के मन में शिष्यों के प्रति वात्सल्य भाव होता है। हम सौभाग्यशाली हैं कि इस कलिकाल में हमें ऐसा संघ और ऐसे गुरु प्राप्त हुए। इस पावन साये में हम अपने भीतर आत्मानुशासन को प्रवर्द्धमान करते रहें।'

मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'तेरापंथ का मुख्य महोत्सव है मर्यादा महोत्सव। उससे पूर्व होनेवाला उत्सव है वर्द्धमान महोत्सव। इस महोत्सव में साधु-साध्वियों के आने का क्रम तो बढ़ता ही है, साथ ही सबको मर्यादा का पाथेय भी प्राप्त होता है। मर्यादा के प्रति सजगता जरूरी है। मर्यादा के भाव संस्कारगत होने चाहिए। इसके राजमार्ग पर चलने वालों को कठिनाइयां नहीं सतातीं। मर्यादानिष्ठा संघ की दीर्घजीविता का आधार है।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जैन दर्शन में 'वड्ढमाण' शब्द का उल्लेख मिलता है। भगवान महावीर के लिए यही शब्द प्रयुक्त हुआ है। वर्द्धमान महोत्सव के साथ भगवान महावीर का नाम जुड़ा हुआ है और यह महोत्सव हमें प्रभु महावीर की स्मृति कराता है। उनके स्मरण मात्र से ही हमें पवित्रता की प्रेरणा मिल सकती है। इस महोत्सव पर साधु-साध्वियों की संख्या वर्द्धमानता को प्राप्त होती है, इसलिए इसका नाम वर्द्धमान महोत्सव रखा गया। हम अपनी साधना की दृष्टि से वर्द्धमान रहें।

साधना के दो आयाम हैं--कषाय का मंदीकरण और निर्धारित उपयुक्त आचार के प्रति जागरूकता। इन दोनों की आराधना करते हुए हम अपने जीवन को धन्य बनाएं। वर्द्धमानता के लिए जरूरी है कि संघ के सदस्यों में सहिष्णुता, विनम्रता और उदारता का विकास हो। पारस्परिक व्यवहार सौहार्दपूर्ण बना रहे।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने 'हाजरी' का वाचन करते हुए साधु-साध्वियों को पांच महाव्रतों, पांच समितियों और तीन गुप्तियों के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा दी। पूज्यवर के प्रवचन के पश्चात बाल मुनि शुभंकरजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया। तदुपरान्त साधु-साध्वियों ने पंक्तिबद्ध खड़े होकर सामूहिक रूप में लेखपत्र का उच्चारण किया। पूज्यवर ने लावासरदारगढ़ की साध्वी अजितप्रभाजी का भी नामोल्लेख किया।

१३ जनवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर लावासरदारगढ़ के श्रद्धालुओं के घरों का स्पर्श करने हेतु गांव में पधारे। मार्ग में भूरीबाई चुप अलख मंदिर में भी आचार्यवर का पदार्पण हुआ। बाहर से कमल के आकार में बना यह अष्टकोणीय मंदिर साधना के लिए निर्मित किया गया है। डॉ. हरिसिंह सिंघावत ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए धर्मस्थान के विषय में अवगति दी। पूज्य आचार्यवर ने उपस्थित जनसमूह को साधना की प्रेरणा प्रदान की। यहां से प्रस्थान कर आचार्यवर ने शताधिक घरों का स्पर्श किया। तेरापंथ समाज के घरों में चरण स्पर्श के दौरान अन्य जैन और जैनेतर समाज का कोई भी प्रार्थी वंचित नहीं रहा। पूज्य आचार्यवर का स्थानीय तेरापंथ भवन में भी पदार्पण हुआ। वहां कुछ क्षण विराज कर आचार्यवर ने 'प्रभो! यह तेरापंथ महान' गीत का संगान किया।

वर्धमान महोत्सव का द्वितीय दिन। प्रातःकालीन कार्यक्रम में समणी ज्योतिप्रज्ञाजी एवं साध्वी विमलप्रज्ञाजी ने तेरापंथ की तेजस्वता के संदर्भ में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। मुनिवृन्द ने समूह स्वर में गीत का संगान किया। मुनि मुनिसुव्रतकुमारजी ने संघनिष्ठा से ओतप्रोत गीत को भावपूर्ण प्रस्तुति दी। साध्वीवृन्द ने भी समवेत स्वरों में गीत प्रस्तुत किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन में कहा--'संघ सबके लिए शरण है, गति है, त्राण है, आधार है, इसलिए संघ को सदा प्रवर्द्धमान रखें। जिस संगठन के सिद्धान्त आदर्श और पारदर्शी हैं, जो संगठन अपने सिद्धान्तों पर अटल रहता है, अपने आदर्शों से समझौता नहीं करता, जिस संगठन के व्यवहार और तौर-तरीके मूल्याधारित होते हैं, वह संघ या संगठन प्रवर्द्धमान होता है। तेरापंथ धर्मसंघ उत्तरोत्तर प्रवर्द्धमान है। इस संघ का प्रत्येक सदस्य मर्यादा को प्राण मान कर चलता है। आज्ञा और मर्यादा हमारे लिए सुरक्षा कवच है। जहां आज्ञा नहीं है, वहां सब शून्य है। जो साधक आज्ञा को सर्वोपरि मानकर चलता है, वह हर जगह सफल होता है। आज्ञा के संस्कार हमारे अस्थि-मज्जा तक पहुंच जाएं।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर का प्रेरणास्पद प्रवचन इसी अंक के प्रारंभ में प्रकाशित है। पूज्यवर के प्रवचन के उपरान्त साध्वी कल्पलताजी ने साध्वी कंचनकुमारीजी(लाडनूं) की कृति 'षडावश्यक : आत्मशुद्धि की प्रक्रिया' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कृति पूज्यवर को उपहृत की।

पूज्यवर ने इस संदर्भ में कहा--'साध्वी कंचनकुमारीजी(लाडनूं) की कृति 'षडावश्यक : आत्मशुद्धि की प्रक्रिया' भेंट की गई। मेरा अनुमान है कि षडावश्यक के संदर्भ में यह महत्त्वपूर्ण कृति होनी चाहिए। पाठकों को इससे आत्मशुद्धि की प्रेरणा मिलती रहे।'

लावासरदारगढ़ का त्रिदिवसीय प्रवास बहुत सफल और कार्यकारी रहा। श्री पारसमल शांतिलाल बाबूलाल लोढ़ा के सहयोग से साहित्य पचास प्रतिशत छूट पर उपलब्ध रहा। साहित्यप्रेमियों ने इस छूट का पूरा लाभ उठाया।

आचार्यप्रवर आगरिया में

१४ जनवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः लावासरदारगढ से प्रस्थान करने से पूर्व विहार मार्ग के विपरीत दिशा में स्थित श्रद्धालुओं के अवशिष्ट घरों का स्पर्श करने हेतु लगभग १ किमी. गांव के भीतर पधारे और न केवल तेरापंथ समाज अपितु अन्य जैन एवं जैनेतर समाज के लोगों की भावना को भी परितृप्ति प्रदान की।

लगभग आठ किमी. का विहार कर पूज्यप्रवर आगरिया पधारे। पूज्यवर के आगमन से आगरियावासियों का हर्षोल्लास चरम पर था। यहां आचार्यवर का प्रवास पूर्व सिंचाई मंत्री श्री सुरेन्द्रसिंह राठौड़ के निवास पर हुआ।

पूज्यवर का प्रवास प्राप्त कर संपूर्ण राठौड़ परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था। उल्लेखनीय है श्री सुरेन्द्रसिंहजी के पिता का लगभग एक माह पूर्व स्वर्गवास हो गया था। सुरेन्द्रसिंहजी ने आचार्यवर के प्रवास हेतु समय से पूर्व राजपूती परंपरानुसार पिता की छमाही कर अपना घर खाली कर दिया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल, कन्यामंडल और किशोरमंडल की प्रस्तुतियों के उपरान्त श्री महेन्द्रसिंह राठौड़ और श्री श्यामसिंह राठौड़ ने आचार्यवर के स्वागत में अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। डा. महेन्द्र कर्णावट ने अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी। कोयम्बटूर से समागत बहनों ने गीत के माध्यम से अपनी भावनाओं को प्रस्तुति दी। उल्लेखनीय है--गत ६ जनवरी से १५ जनवरी तक कोयम्बटूर के चालीस व्यक्तियों ने सामूहिक रूप में पूज्यवर की उपासना का लाभ लिया। कार्यक्रम में मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी का प्रेरक संभाषण हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'सांसारिक संदर्भों में पैसा, विवाह संस्कार, व्यवसाय आदि अनेक चीजों को उपादेय माना जा सकता है। आध्यात्मिक दृष्टि से संवर और निर्जरा--ये दो उपादेय हैं। नव पदार्थों में मोक्ष उपादेय होता है। संवर और निर्जरा उसके दो साधन हैं। यदि जीवन में इन दोनों का योग हो तो आत्मा मोक्ष की ओर गति कर सकती है।' पूज्यवर ने अपने प्रवचन में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह--इन पांच यमों की साधना की प्रेरणा प्रदान की।

आगरिया में तेरापंथ समाज के १३ परिवार हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात् और प्रातः विहार से पूर्व आचार्यवर ने उनके घरों का स्पर्श किया। रात्रि में श्रद्धालुओं को पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

आचार्य महाश्रमण मर्यादा द्वार का लोकार्पण

१५ जनवरी। आमेट में प्रवेश से पूर्व नगर सीमा के पास १४८वें मर्यादा महोत्सव व अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में चामुंडा माता मंदिर के पास आगरिया चौराहे पर परम श्रद्धेय आचार्यवर की पावन सन्निधि में 'आचार्यश्री महाश्रमण मर्यादा द्वार' का लोकार्पण आमेट नगरपालिका के चेयरमैन श्री कैलाश मेवाड़ा द्वारा किया गया। श्रीमती कैलाशदेवी भंवरलालजी समदरिया (कुआंथल-आमेट-बड़ोदा) की स्मृति में उनके परिवार द्वारा निर्मित इस द्वार की ऊंचाई ३५.५ फीट व चौड़ाई ४४ फीट है। इस विशाल द्वार के लोकार्पण पर उपखंड अधिकारी श्रीमती कीर्ति राठौड़, थानाधिकारी श्री दलपतसिंह, तहसीलदार श्री रामकिशन सोनी सहित अनेक अधिकारी व बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

द्वार के लोकार्पण के बाद रेलवे क्रासिंग के पास स्थित श्री किशनलाल सूर्या के आवास पर पूज्यप्रवर का पदार्पण हुआ। मेवाड़ के निवासी व प्रवासी हजारों लोग अपने आराध्य की अगवानी में उपस्थित थे। लगभग एक घंटे के प्रवास में आचार्यवर ने सूर्या परिवार को निकट सेवा का अवसर प्रदान किया। अपने आराध्य को अपने आंगन में पाकर पूरा सूर्या परिवार प्रफुल्लित था। परिवार के सदस्यों ने गीत के माध्यम से अपनी प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी।

मर्यादा महोत्सव हेतु आमेट में शुभागमन

तेरापंथ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ससंघ मर्यादा महोत्सव हेतु एक विशाल रैली के साथ प्रस्थित हुए। स्टेशन चौराहा, बस स्टैण्ड, पालीवाल मोहल्ला, बराई मोहल्ला, रामचौक-रावला, तकिया, होलीथान, गांधी चबूतरा, लक्ष्मी बाजार होते हुए जवाहर नगर स्थित तेरापंथ भवन में प्रवेश किया। हजारों लोग रैली में संभागी बने। विभिन्न वर्गों व जातियों के हजारों लोग मानवता के मसीहा का अभिवादन कर रहे थे। पूज्यवर की एक झलक पाने के लिए लोग रोडवेज की बसों, वृक्षों, छज्जों प छतों पर चढ़े हुए थे। जैन-अजैन नहीं, जन-जन महापुरुष के दर्शनों के लिए आतुर हो रहा था।

श्रावक समुदाय 'तेरापंथ रा सूर्य नै घणी-घणी खम्मा' जैसे श्रद्धापूर्ण स्वरों से अपनी आस्था को अभिव्यक्ति दे रहे थे। श्री जगदीश जोशी के नेतृत्व में शांतिकुंज गायत्री परिवार के स्वस्तिक वाचक मंत्रों का समुच्चारण कर वातावरण को मंगलमय बना रहे थे। शेठ परिवार द्वारा संचालित जैन बैण्ड गीतों की धुन पर भक्ति की स्वर-लहरियां बिखेर रहा था। बस स्टैण्ड पर लगी झांकी सन् १९८५ के आचार्य तुलसी के चतुर्मास के उस प्रसंग को जीवंत बना रही थी, जब संत हरचंदसिंह लोगोंवाल और सुरजीतसिंह बरनाला ने आचार्यश्री तुलसी के साथ वार्ता करने के बाद ऐतिहासिक राजीव-लोंगोवाल समझौते की नींव डाली थी। आस्थाशील सुश्राविका चंदूबाई की श्रद्धा का

निदर्शन कराती झांकी भी सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। गणेश चौक स्थित सिद्धि विनायक मंदिर, प्राचीन मंदिर जयसिंह श्यामजी पार्श्वनाथ जैन मंदिर के पुजारियों व सदस्यों ने पूज्यवर का स्वागत किया। दाऊदी बोहरा समाज के मुस्लिम भाइयों ने इंसानियत के मसीहा का तहेदिल से इस्तकबाल किया। नगर के मन्दिर व मस्जिद में पूज्यवर के चरण टिके। तेरापंथ के प्रति प्रारंभ से ही सम्मान की भावना रखने वाले मेवाड़ के सोलह रावों में से एक आमेट ठिकाने के राव प्रभुप्रतापसिंह के नेतृत्व में राव परिवार ने अन्नदाता का मुजरो किया। आमेट की स्थापना से जुड़े पालीवाल समाज(बड़ी पोल) ने आचार्यवर का अभिनंदन किया। रेगर समाज के सदस्य बाबा रामदेव मंदिर के पास पंक्तिबद्ध स्वागत में खड़े थे। रिद्धि-सिद्धि परिवार, जनरल व्यापार मंडल सहित नगर की अनेक धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के सदस्यों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर पूज्यप्रवर की अगवानी की। चारों ओर उत्साह और उमंग का दरिया हिलोरें ले रहा था। सुवाक्यों से युक्त तख्तियां अपने हाथों में उठाए रैली में संभागी जयघोष करते हुए अपनी श्रद्धा को अभिव्यक्ति दे रहे थे। रैली में सबसे आगे विद्या निकेतन, तुलसी अमृत विद्यापीठ विद्यालय एवं ज्ञानशाला के बच्चों के साथ महिलाएं कदमताल कर रही थीं। समणीवृन्द, महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी के साथ साध्वी परिवार अपनी अमल-धवल छवि से सबको प्रभावित कर रहा था। जैन ध्वज के पीछे संघ शास्ता महासूर्य आचार्यप्रवर आशीर्वाद की मुद्रा में अपना कर कमल उठाए सबके नयनों को तृप्त कर रहे थे। पूज्यवर जन-जन के अभिवादन को स्वीकार कर रहे थे। पूज्यवर के पीछे था संत समुदाय और उनका अनुगमन कर रहा था श्रावक वर्ग। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि नगर के चौक, तिराहे, गलियां, बाजार--सब जगह एक उत्सव का-सा माहौल था। लग रहा था जैसे पूरा नगर तेरापंथमय, महाश्रमणमय और आनंदमय बना हुआ है।

इतिहास के झरोखे से

अंबाजी पालीवाल द्वारा लगभग तेरह सौ वर्ष पूर्व मेवाड़ के इस भू-भाग में सघन आम्र वृक्षों के मध्य अंबापुर नाम से एक गांव की स्थापना हुई जो कालान्तर में आमेट के रूप में परिवर्तित हो गया। चुंडावत राजपूत खानदान की वंश परंपरा में जहां जयमल (जग्गा) व पन्ना जैसे शूरमा हुए, वहां जयसिंह जैसे धार्मिक व श्रद्धाशील क्षत्रिय भी हुए। कहा जाता है कि जयसिंह की भक्ति से प्रभावित होकर चारभुजानाथ चामत्कारिक रूप में धरती के गर्भ से प्रकट हुए। उस स्थान पर आज जयसिंह श्यामजी का मंदिर स्थापित है। अनेक धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय घटनाओं की साक्षी इस नगरी में पुरानी बसावट के साथ लक्ष्मी बाजार, जवाहर नगर क्षेत्र में सैंकड़ों दुकानें हैं। बाजार बहुत आकर्षक है। नगर के विभिन्न वर्गों के अपने-अपने धर्मस्थान हैं। यहां के सात सौ जैन परिवारों में लगभग चार सौ पचास परिवार तेरापंथी हैं।

वि.सं.१८३५ में तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु ने इस नगर में अपना प्रथम चतुर्मास किया। जिस चौकी पर विराजमान होकर वे देशना देते थे, वह आज भी प्रायः उसी रूप में 'भीखणजी की ओटो' नाम से मौजूद है। वि.सं.१८६६ में द्वितीय आचार्य भारमलजी ने, उसके बाद जयाचार्य का मुनि रूप में शासन महास्तंभ मुनि हेमराजजी स्वामी के साथ यहां चतुर्मास हुआ। आचार्य मघवा का वि.सं.१९४३ में, आचार्य डालचन्दजी का वि.सं.१९५९ में, आचार्य कालूगणी का १९७२ व १९९२ में यहां पदार्पण हुआ। आचार्य तुलसी ने वि.सं. २०१७ में तेरापंथ द्विशताब्दी के समय यहां मर्यादा महोत्सव किया। वि.सं. २०४२ में गुरुदेव तुलसी के चतुर्मास और अमृत महोत्सव का यह नगर साक्षी बना। गुरुदेव तुलसी का यहां तीन बार पदार्पण हुआ। आचार्य महाप्रज्ञ आचार्य के रूप में वि.सं. २०६१ में यहां पधारे। उस समय युवाचार्य के रूप में महाश्रमण उनके साथ थे।

यहां के अमरोजी डांगी परिवार ने सर्वप्रथम तेरापंथ धर्मसंघ की श्रद्धा स्वीकार की। चंदूबाई कोठारी की निष्ठा भी उल्लेखनीय है। आमेट के सबसे पहले दीक्षित मुनि गुमानजी एवं साध्वी मगदूजी से लेकर मुनि मोहनलालजी तक दिग्गज साधु-साध्वियों की एक पूरी पंक्ति है। इसी भूमि पर मुनि नथमलजी स्वामी (रींछेड़) का ६९ दिवसीय अलौकिक संथारा एवं साध्वी भूराजी का महाभद्रोत्तर तप संपन्न हुआ।

राजसमन्द जिले का उपखंड मुख्यालय आमेट इस मायने में विशेष सौभाग्यशाली है कि सरदारशहर में विधिवत् पदाभिषेक के अवसर पर प्रदत्त अपने प्रथम संबोधन में पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण ने आमेट मर्यादा महोत्सव की घोषणा की। आचार्यवर के अमृत महोत्सव का तृतीय चरण भी यहां आयोजित हो रहा है। ऐतिहासिक केलवा चतुर्मास एवं मेवाड़ संभाग में आपके श्रमसाध्य परिभ्रमण ने संपूर्ण मेवाड़ में एक उत्सव का-सा माहौल निर्मित

कर दिया। विवाह आदि सामाजिक प्रसंगों पर भी जहां पूरा परिवार एकत्रित नहीं हुआ, आचार्यवर के मंगल पदार्पण पर पूरा परिवार अपने गांव में पहुंचा। भक्तिमान परिवारों ने पूज्यवर के आगमन पर कई-कई दिनों तक अपने व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रखे। इस यात्रा में लोगों की श्रद्धा-भक्ति के कई जीवंत उदाहरण देखने को मिले। आचार्यप्रवर श्रमशीलता के मूर्तिमान आदर्श हैं। केलवा से आमेट बीस किमी. से भी कम है। पर लोकोपकार की भावना के कारण पूज्यवर के लिए यह दूरी ५४६ किमी. से भी अधिक हो गई। गांव के घरों में पगल्या हेतु जो करुणावृष्टि आपने की, उसे जोड़ा जाए तो यह आंकड़ा ६५० किमी से भी अधिक का बनता है।

पूज्य आचार्यवर ने लगभग ग्यारह बजे गगनभेदी नारों के साथ तेरापंथ भवन में प्रवेश किया। तेरापंथ भवन के परिपार्श्व में स्थित 'महाश्रमण विहार' का श्री देवीलाल दिनेशकुमार छाजेड़(आमेट-मुम्बई) तथा भोजनशाला का उद्घाटन श्रीमती सोसरबाई-कुन्दनलाल मेहता (सेवंत्री-आमेट-मुम्बई) ने किया। विशेष सहयोगी श्री बाबूलाल विनोदकुमार कच्छारा, श्री किशनलाल माणकचन्द सूर्या व श्री कन्हैयालाल चांदमल चींपड़ रहे।

स्वागत और अभिनंदन समारोह

तेरापंथ समाज द्वारा संचालित तुलसी अमृत विद्यापीठ परिसर में निर्मित अहिंसा समवसरण में आयोजित स्वागत व अभिनंदन कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल की बहनों के स्वागत गान से हुआ। स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल कच्छारा, मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के संयोजक श्री धर्मचन्द खाब्या, स्वागताध्यक्ष श्री उत्तमचन्द बापना ने पूज्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। स्थानीय तेयुप के सदस्यों के स्वागत गीत के बाद आमेट नगरपालिका के चेयरमैन श्री कैलाश मेवाड़ा, कुंभलगढ़ के विधायक श्री गणेशसिंह परमार, राजस्थान के खेल व युवा मामलों के राज्यमंत्री श्री मांगीलाल गरासिया, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख श्री हस्तीमल हिरण, दाऊदी बोहरा मुस्लिम समाज के मुल्ला सादिकभाई, व्यवस्था समिति के सहसंयोजक एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के उपाध्यक्ष श्री सलिल लोढ़ा, श्री प्रकाश बोहरा ने पूज्यवर के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए। आमेट में चतुर्मास संपन्न करनेवाली साध्वी नगीनाजी ने अपने वक्तव्य में गुरुदर्शन से प्राप्त उल्लास को अभिव्यक्ति दी। मुनि तत्वरुचिजी ने अपनी जन्मभूमि की ओर से आराध्य की अभ्यर्थना की। आमेट में दो माह से प्रवासित शासनश्री मुनि किशनलालजी ने अपने विचार व्यक्त किए। कन्यामंडल की संयोजिका सुश्री स्वीटी दक ने पूज्यवर का हस्तनिर्मित स्केच भेंट किया।

मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी ने अपने वक्तव्य में कहा--'तेरापंथ धर्मसंघ अनुशासन और मर्यादा के प्रति समर्पित धर्मसंघ है। आमेट में आयोजित होने जा रहे मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्यप्रवर से सबको पावन पाथेय प्राप्त होगा। आचार्यवर का यह प्रवास धर्मसंघ के लिए, इस नगर के लिए, सबके लिए मंगलमय बनेगा, ऐसा विश्वास है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'जिस धरती पर संतों के चरण पड़ते हैं, वह धन्य बन जाती है। आचार्यवर का जहां भी पदार्पण होता है, वहां उल्लास और उत्साह का वातावरण बन जाता है, इसे हमने इस पूरी यात्रा में देखा। आमेट में मर्यादा महोत्सव और अमृत महोत्सव को यादगार बनाने हेतु आमेटवासी ऐसा अभियान चलाएं, जिससे आनेवाली पीढ़ियों को प्रेरणा प्राप्त हो और वे कृतार्थता की अनुभूति करें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में मंगल को प्राप्त करना चाहता है। इसके लिए वह तरह-तरह के प्रयास करता है। इस जगत में अहिंसा, संयम व तपरूप त्रिआयामी धर्म सबसे बड़ा मंगल है। जीवन में दया, अनुकंपा तथा इन्द्रिय, वाणी व विचार का संयम है तो यह मानना चाहिए कि मंगल है। धर्म क्रिया में संलीन व्यक्ति के चरणों में देवता भी प्रणत होते हैं। इसलिए हमें अपने जीवन में धर्माराधना करते रहना चाहिए। मेवाड़ में भ्रमण करते-करते हम मेवाड़ के मुख्य क्षेत्र आमेट में मर्यादा महोत्सव करने के उद्दे य के साथ आए हैं। मैं आचार्य भिक्षु के प्रति प्रणत हूं। उनकी तपः साधना व संयम से एक ऐसे शासन का जन्म हुआ। ऐसे तेरापंथ शासन की जन्मभूमि केलवा में हमने चतुर्मास किया। हमारे धर्मसंघ में आचार, अनुशासन व मर्यादा का बड़ा महत्त्व है। उस महत्त्व को अभिव्यक्त करने का अवसर है मर्यादा महोत्सव।'

आमेट प्रवास की चर्चा करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'हमने आमेट में गुरुदेव तुलसी के चरणों में रहकर

चतुर्मास किया है। यह वही तेरापंथ भवन है, जहां संत लोंगोवाल व सुरजीतसिंह बरनाला आए थे। यहां दो दिन ठहरे और गुरुदेव से विस्तार के साथ वार्तालाप किया। यह राजीव-लोंगोवाल समझौते की पृष्ठभूमि का स्थान है। आमेट में मर्यादा महोत्सव परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञ को करना था, पर नियति ऐसी बनी कि अकस्मात् विहार करना पड़ा। मैं मेरे परमपूज्य गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञ का वचन पूरा करने आमेट आया हूं। महोत्सव उनके द्वारा घोषित था। उनका काम मेरा काम है। मैं उनका काम परिसंपन्न करने के लिए आया हूं।

मर्यादा महोत्सव के प्रसंग पर अन्तरंग सार-संभाल का कार्य चलता है। जब मैं साधु-साध्वियों और समणश्रेणी को देखता हूं तो आह्लाद की अनुभूति होती है। हम लोगों ने अध्यात्म का पथ स्वीकार किया है तो हमारा लक्ष्य स्पष्ट रहे कि जीवन में साधना का विकास हो। कइयों की क्षेत्रीय दूरी अवश्य है, पर भावात्मक दृष्टि से मैं उन्हें अपने निकट समझ रहा हूं। आज आमेट प्रवेश के अवसर पर कितने ही लोगों ने स्वागत किया। जैन, जैनेतर, वैदिक, मुस्लिम--सबने सौहार्द भाव दिखाया। इसे मैं उन सबकी प्रमोद भावना मानता हूं।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों एवं मंत्री मुनिश्री आदि मुनियों के साथ आमेट आया हूं। साध्वी नगीनाजी का चतुर्मास आमेट था। ये अच्छा काम करने वाली साध्वी हैं। इन्हें देखकर साध्वी भत्तूजी की याद आती है। वे बहुत अच्छी साध्वी थीं और मेरी संसारपक्षीया दादीजी थीं। उनका इकतीस वर्ष पूर्व स्वर्गवास हो गया था। साध्वी नगीनाजी के माध्यम से मैं साध्वी भत्तूजी का स्मरण कर रहा हूं। साध्वी नगीनाजी ने अभी तीन वरदान मांगे। मैं उन्हें कहना चाहूंगा कि वे हमेशा उन्हें याद करते रहें।

मुनिश्री किशनलालजी स्वामी चतुर्मास के बाद यहां आ गए। ये जीवनविज्ञान का काम करनेवाले हैं। मुनि तत्वरुचिजी आए हैं। इसी क्षेत्र के युवा संत और काम करनेवाले संत हैं। मैंने मुनि मोहनलालजी स्वामी को देखा है। बहुत ही स्तरीय व विद्वान संत थे। अच्छे गीतों के निर्माण में कुशल थे। तेरापंथ दर्शन का अध्ययन तथा तेरापंथ की प्रतिष्ठा को बढ़ाने व श्रावकों की सार-संभाल करने में अच्छी रुचि रखते थे। मैं मुनि मोहनलालजी को उनकी जन्मस्थली में सम्मान के साथ याद कर रहा हूं। मुनि रमेशकुमारजी व मुनि चैतन्यकुमारजी में श्रद्धा भावना है। अच्छा श्रम करने वाले संत हैं। मुनि चैतन्यकुमारजी कोटा मार्ग में दुर्घटनाग्रस्त हो गए, पर बहुत बचाव हो गया। मुनि रमेशजी ने अग्रगण्य होते हुए भी अकेले इनकी अच्छी सेवा की है। यह ध्यान रहे कि संघ ने सेवा दी है, उसे अपनी सेवा देते रहना।'

आमेटवासियों से अपील करते हुए शांतिदूत आचार्यवर ने कहा--'हमारे त्रिसाप्ताहिक प्रवास का आप लोग पूरा लाभ उठाएं। एक प्रकार से इस समय के लिए पूर्ण समर्पित हो जाएं। हमारे श्रावक समाज की श्रद्धा-भक्ति उल्लेखनीय है। लेकिन इसके साथ ज्ञानाराधना व साधना में पराक्रम भी अपेक्षित है।'

कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया। कोटा चतुर्मास संपन्न कर मुनि रमेशकुमारजी ने तथा सायरा चतुर्मास संपन्न कर साध्वी लब्धिप्रभाजी ने आज गुरु-दर्शन किए। रात्रि में स्वागत का अवशिष्ट कार्यक्रम चला।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर साहित्य समिति द्वारा साधु-साध्वियों और समणश्रेणी के लिए समायोजित प्रतियोगिताओं के अंतर्गत भाद्रपद मास और कार्तिक मास में क्रमशः निबन्ध लेखन और गीत निर्माण प्रतियोगिता समायोजित हुई। 'आचार्यश्री महाश्रमण : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व' विषय पर आयोजित इन प्रतियोगिताओं में ११६ निबन्ध एवं १७९ गीत संप्राप्त हुए। प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार हैं--

निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

वरिष्ठ वर्ग साधु	वरिष्ठ वर्ग साध्वी	कनिष्ठ वर्ग साधु	कनिष्ठवर्ग साध्वी
प्रथम मुनि राजेन्द्रकुमार	साध्वी मुदितयशा	मुनि विश्रुतकुमार	साध्वी लक्ष्यप्रभा
द्वितीय मुनि मदनकुमार	साध्वी सहजयशा	मुनि मृदुकुमार	साध्वी संगीतप्रभा
तृतीय मुनि ऋषभकुमार	साध्वी ऋजुयशा	मुनि अनंतकुमार	साध्वी स्वस्तिकप्रभा
	साध्वी योगक्षेमप्रभा		

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

गीत निर्माण प्रतियोगिता

प्रथम मुनि कुमारश्रमण	साध्वी चांदकुमारी साध्वी सिद्धप्रज्ञा	मुनि भव्यकुमार	साध्वी सुमतिप्रभा
द्वितीय मुनि देवेन्द्रकुमार	साध्वी मधुस्मिता साध्वी ऋजुयशा	मुनि गौरवकुमार	साध्वी सुधाप्रभा
तृतीय मुनि धर्मचन्द	साध्वी मधुलता	मुनि महावीरकुमार	साध्वी जिनयशा

निबन्ध प्रतियोगिता में मुनि कुमारश्रमणजी व मुनि हिमांशुकुमारजी ने साधुओं के दोनों वर्गों और साध्वियों के वरिष्ठ वर्ग के निर्णायक की भूमिका निभाई। साध्वियों के कनिष्ठवर्ग के निर्णायक का दायित्ववहन साध्वी विमलप्रज्ञाजी एवं साध्वी मुदितयशाजी ने किया। गीत निर्माण प्रतियोगिता में मुनि विजयकुमारजी एवं मुनि दिनेशकुमारजी साधुओं और साध्वी शारदाश्रीजी एवं साध्वी संगीतप्रभाजी साध्वियों के निर्णायक रहे।

परमपूज्य आचार्यवर ने साधु-साध्वियों को साधना के विकास के साथ अन्यान्य विधाओं में विकास करने की प्रेरणा प्रदान करते हुए प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहने वाले प्रतियोगियों को क्रमशः इकतीस, इक्कीस, ग्यारह कल्याणक तथा शेष सभी संभागियों को नौ-नौ कल्याणक बक्सीस किए।

आचार्य महाश्रमण एज्युकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन का शुभारंभ

परमपूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में १० जनवरी को प्रातः श्री रमेश कोठारी, श्री ख्यालीलाल तातेड़, श्री कांतिलाल कोठारी, श्री अनिल धाकड़, श्री राकेश कोठारी, श्री सलिल लोढ़ा आदि कार्यकर्ता उपस्थित हुए और पूज्यवर से मंगलपाठ का श्रवण कर आचार्य महाश्रमण एज्युकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन का शुभारंभ किया। उल्लेखनीय है कि आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में समाज में उच्चस्तरीय शिक्षण संस्थान की अपेक्षापूर्ति की दृष्टि से अमृत महोत्सव के द्वितीय चरण पर यह प्रकल्प प्रस्तुत किया गया था। इस परियोजना के संदर्भ में अधिक जानकारी अथवा न्यासी के रूप में जुड़ने हेतु श्री रमेश कोठारी (सूरत) मोबाइल नं.०९८२५११३५३६ से संपर्क किया जा सकता है।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

६१००/- अपने आवास सूर्या हाउस में पूज्यप्रवर के आगमन एवं प्रवास के उपलक्ष्य में श्रीमती कुसुम-किशनलाल सूर्या, रीया-सचिन, प्रिया-हैप्पी, सुपौत्र अर्थ, सुपौत्री बृहा, विषा एवं समस्त सूर्या परिवार, आमेट-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व.श्री चौथमलजी बोथरा बीदासर की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मोहनीदेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू हंसराज-सुप्यार (बेंगलोर) विजयलक्ष्मी (चेन्नई) महेन्द्र-संजू (मदुरै) प्रकाश-कुसुम (कोयम्बतूर) सुपौत्र राकेश, राहुल, विवेक, विशाल, चिराग, हेमन्त बोथरा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी के लावासरदारगढ़ पदार्पण के अवसर पर श्री कंवरलाल-पारसदेवी ओस्तवाल द्वारा शीलव्रत स्वीकार करने के उपलक्ष्य में बसंतीलाल, मदनलाल, ख्यालीलाल, बाबूलाल, प्रकाशचन्द, राकेश-शशिकला, सुपौत्र देवांश ओस्तवाल, लावासरदारगढ़-अहमदाबाद द्वारा प्रदत्त।

संपर्क के लिए हमारा पता है–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, आमेट

पो. चारभुजारोड-३१३ ३३२, जि. राजसमन्द (राजस्थान) फोन : ०९६८००५५३८१, ०९३५२४०४६४१

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

प्रकाशन दिनांक : २१-१-२०१२

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**